वलीदे का'बा

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ादहुसैन काज़ी

अ़ली رضی اللہ عنہ

वलीदे का'बा

मुरत्तिब

ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी

डॉ. शहेज़ाद काज़ी

किताब का नाम : अ़ली ﷺ वलीदे का'बा

मुरत्तिब : ख़ुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी : डॉ. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

फाउन्डर एन्ड चेरमेन

ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

सफहात : 52

सन इशाअत : मार्च, 2019 (हिजरी 1440, 13 रज्जब)

कम्पोसिंग/प्रिंटिंग : ईमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत),

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

ब इसाले सवाब

My Grand Father

मरहूम कासमखान इब्ने गुलाबखान खोखर

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

फाउन्डर एन्ड चेरमेन : डॉ. शेहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

मोडासा, गुजरात, इन्डिया

Contact No : 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है। अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से **"अ़ली वलीदे का'बा** किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार , ख़ास कर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो। ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफ्सुसज़किया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाक़िम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया। एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अहले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ाए इलाही में शहीद हुए। कहीं हबीब इब्न मुजाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई , इमाम हाकिम , इमाम बुख़ारी , इमाम अबू हनीफा , इमाम शाफीई बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख़्वाजा गरीब नवाज , निजामुद्दीन औलिया , वारिसे पाक , मख़्दुम माहिम और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए। वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अहले बैत नासबियत व ख़ारजियत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे।

इस ज़माने में भी नासबियत और ख़ारजियत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहूँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रखकर लोगों से फजाइले अहले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अहले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबियत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्जीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फजाइले अहले बैत छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस Democracy (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अहले बैत नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अहले बैत से दूर

किया जा रहा है। कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अहले बैत ﷺ पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबीए करीम ﷺ ने फरमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अ़ली ؓ भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी) (कश्फुल अस्तार, लि-हैस़मी) (रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

"हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या'नी मेरे अहले बैत ؓ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले।"

(इमाम निसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अहले बैत ؓ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है। आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अहले बैत ؓ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अहले बैत ؓ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है। मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है। अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

इस छोटे से रिसाले में प्रोफेसर ख़ुसरो कासिम साहबने नफसे रसूल ﷺ, दामादे पयम्बर ﷺ, बारह इमामों ؑ में पहले इमाम सय्यिदिना मौला अ़ली ؑ की विलादत का'बातुल्लाह शरीफ में हुई इसके तकरीबन २६ जितने रेफरन्स पेश किये है जो उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के लिए बहोत बेशकींमती तोहफा है। प्रोफेसर साहब ने किताब के आख़िर में कुछ किताबो के Scan Page भी पेश किये है। अल्लाह ﷻ उनकी इस मेहनत के बदले रोजे कयामत रसूलुल्लाह ﷺ की शफाअत नसीब फरमाये।

नासबियत के इस दौर में कुछ फिर्कापरस्त लोगों ने येह केहना शुरु कर दिया है के मौला अ़ली ؑ की विलादत का'बा में नहीं हुई बल्कि आपसे पहले भी कुछ की विलादत का'बा में हुई। इन तमाम बातो का इस किताब में मुहद्दिषीन, मुअर्रिख़ीन, मुहकिक्कीन की किताबो से जवाब दिया गया है। अल्लाह ﷻ से दुआ है कि इमाम जा'फर सादिक फाउन्डेशन की इस किताब को हिन्दी में पब्लिश करने की काविश को कुबूल फरमाये। आमीन....

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अहले बैत ؓ की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
13 रज्जब, हिजरी 1440

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

पेश लफ्ज़

सय्यिदिना अ़ली ﷺ की विलादत बा-सआदत का'बा मोअज्ज़मा के अन्दर हुई और यह उनकी बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है और उनके मनाक़िब (Virtues) को शुमार करते हुए बेशुमार उलमाए इस्लाम ने अपनी अपनी तसानीफ़ में इसका तज़किरा फ़रमाया है। सय्यिदिना अ़ली ﷺ की विलादत ख़ानाए का'बा में क्यूँ हुई, इसके मुतल्लिक़ अल्लामा आलूसी फ़रमाते हैं :

سبحان من يضع الأشياء فی مواضعها وهو أحكم الحاكمين.

"तमाम नक़ाइस से पाक है वह ज़ात जो तमाम चीज़ों को अपनी जगहों पर रखती है और उसकी ज़ात सबसे बेहतरीन फ़ैसले लेती है।"

फ़ज़ीलत के यह बात ऐसी नहीं थी जिससे इख़्तलाफ़ किया जाता लेकिन उसको क्या कहें के कभी कभी लोग साबितशुदा हक़ाइक़ से भी इख़्तलाफ़ करने लगते हैं। यह मसला भी इसी तरह से मुख़्तलिफ़ बहस बना दिया गया है। ज़ेरे नज़र रिसाला में इस्लामी तारीख़ के मुमताज़ मुअर्रिख़ीन, मुहद्दिषीन, तज़किरा निगार हज़रात के हवाले से यह बात साबित की गयी है कि सय्यिदिना अ़ली رضي الله عنه वलीदे का'बा हैं और यह शर्फ़ केवल उन्हीं को हासिल है कि उनकी विलादत का'बा के अन्दर हुई।

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि इस रिसाले को शर्फ़ क़बूल अता फ़रमाए और क़यामत के दिन हमारा भी शुमार भी आशिक़ाने अहले बैत ﷺ में फ़रमाए। आमीन!

तालिबे दुआ

ख़ुसरो क़ासिम

Assistant Professor
Mechanical Engineering Department
A.M.U Aligarh

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

(ऐ अल्लाह रहमत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद ﷺ पर, और हज़रत मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा कि तूने रहमत नाज़िल फ़रमाई इब्राहिम عليه السلام पर और इब्राहिम عليه السلام की आल पर, बेशक़ तू तारीफ़ के लायक़ और बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।)

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

(ऐ अल्लाह बरकत नाज़िल फ़रमा हज़रत मुहम्मद ﷺ पर और हज़रत मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसी की बरकत नाज़िल फ़रमाई तूने इब्राहिम عليه السلام पर और इब्राहिम عليه السلام की आल पर, बेशक़ तू तारीफ़ के लायक़ और बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

1. मुअर्रिख़ अल्लामा मसउदी رحمة الله علیه

अबुल हसन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़ली मसउदी رحمة الله علیه (वफ़ात : 346 हिजरी) अपनी तारीख़ में लिखते हैं :

بويع علی بن ابی طالب فی اليوم الذی قتل فيه عثمان بن عفان رضی الله عنه و كان مولده فی الكعبة.

(مروج الذهب ومعادن الجوهر برحاشيه تاريخ كامل ،جلد ۵، ص ۱۷۴، مطبوعه مصر)

तर्जुमा : “अ़ली बिन अबी तालिब رضی الله عنه से उस रोज़ बैत की गयी जिस दिन उस्मान बिन अफ्फ़ान رضی الله عنه शहीद किये गए और इन हज़रत की जाए विलादत ख़ानाए का’बा है।”

मसउदी वह मुअर्रिख़ (Historian) है जिसकी निस्बत मौलाना शिब्ली नोमानी तहरीर फ़रमाते हैं : “यह फन तारीख़ का इमाम है। इस्लाम में आज तक उसके बराबर कोई वसीअ अल नज़र मुअर्रिख़ (Historian) पैदा नहीं हुआ, उसकी तमाम तारीख़ी किताबें मिलती तो किसी ओर तसनीफ़ की कोई हाजत न होती।”

इन्साफ यह है कि अगर कोई ओर मुअर्रिख़ ख़ानाए का’बा में विलादत हज़रत अ़ली رضی الله عنه को न भी तस्लीम करता तो सिर्फ मसउदी का लिखना काफी था जो आज से एक हज़ार साल पहले फ़ज़ीलत के इजहार में अजर नहीं करता।

2. मुहद्दिष इमाम हाकिम नेसापुरी رحمة الله علیه

इमामे मुहद्दिसीन अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह हाक़िम नेसापुरी رحمة الله علیه (वफ़ात 405 हिजरी) हदीष की अपनी शहरह आफाक़ तसनीफ़ “मुस्तदरक” में लिखते हैं कि मुसअब बिन अब्दुल्लाह ने हकीम बिन हज़ाम के नसब का तज़किरा करते हुए यह भी इजाफ़ा किया :

وأمه فاختة بنت زهير بن أسد بن عبدالعزى ،وكانت ولدت حكيماً في الكعبة وهي حامل ،فضربها المخاض وهي في جوف الكعبة فولدت فيها،فحملت في نطع،وغسل ماكان تحتها من الثياب عند حوض زمزم،ولم يولد قبله ولا بعده في الكعبة أحد.

قال الحاكم:وهم مصعب في الحرف الأخير،فقد تواترت الأخبار أن فاطمة بنت أسد ولدت أمير المؤمنين علي بن أبي طالب كرم الله وجهه في جوف الكعبة.

(अल मुस्तदरक, रक़मुल हदीस : 6146, क़दीमी कुतुबख़ाना, आरामबाग़, कराची)

हकीम की वालिदा का नाम फाख़्ता बिन्त ज़हीर बिन असद बिन अब्दुल उज़्ज़ा था, उन्होंने हकीम को का'बा में जन्म दिया । वह हमल से थीं और जिस वक़्त का'बा के अन्दर थीं उनको हमल का दर्द शुरू हो गया, चुनांचे वही विलादत हो गयी । बच्चे को उन्होंने एक कपडे में लपेट लिया, और अपने कपड़े हौजे ज़मज़म पर जा कर साफ़ किये । हकीम से पहले और न उनके बाद कोई दूसरा का'बा में पैदा हुआ ।" इमाम हाकिम رحمة الله عليه इस रिवायत पर तब्सिरा करते हुए कहते हैं : **आख़री अल्फाज़ में मसाब से वहम हो गया है क्यूंकि मुतवातिर रिवायत से साबित है कि फ़ातिमा बिन्त असद رضي الله عنها ने अमीरुल मो'मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब رضي الله عنه को का'बा में जन्म दिया था ।"**

इमाम हाकिम رحمة الله عليه को चूँकि मुसअब के कौल की तरदीद करनी थी, इसलिए मौला अ़ली رضي الله عنه की विलादत का ज़िक्र यहाँ किया । फ़जाइल वाले बाब में इस बात का ज़िक्र नहीं किया । मुसअब के कौल को रद करने का सही मौक़ा यही था कि मौला अ़ली رضي الله عنه की विलादत का ज़िक्र कर दिया जाए । इमाम हाकिम رحمة الله عليه अहले हदीष और अहले सुन्नत दोनों मकातबे फिक्र में मोतबर आलिम शुमार किये जाते हैं ।

इमाम ज़हबी رحمة الله عليه ने भी इमाम हाकिम رحمة الله عليه की ताईद की है और अपनी तल्ख़ीस में इमाम हाकिम رحمة الله عليه का कौल और उनका तब्सिरह नक़ल किया है ।

(तल्ख़ीस मुस्तदरक, जिल्द 5, 197 सफ़्हा, पब्लिश पाकिस्तान)

3. अल्लामा इब्ने मग़ाजिली शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह

इब्ने मग़ाज़िली शाफ़ई रहमतुल्लाह अलैह (वफ़ात : 483 हिजरी) अपने मनाक़िब (Virtues) में लिखते हैं :

عن علی بن الحسین، قال: کنا زوار الحسین وهناک نسوة کثیرة، إذ أقبلت امرأة منهن فقلت لها: من أنت رحمک الله؟ قالت: أنا زبدة بنت قریبة بن العجلان من بنی ساعدة. فقلت لها: فهل عندک شیء تحدثنی به؟ قالت: إی والله حدثتنی عمارة بنت عبادة بن نضلة بن مالک بن عجلان الساعدی، أنها کانت ذات یوم فی نساءٍ من العرب إذ أقبل أبو طالب کئیباً حزیناً، فقلت له: ما شأنک؟ قال: إن فاطمة بنت أسد فی شدة المخاض، وأخذ بیدها وجاء بها الی الکعبة و قال: اجلسی علی اسم الله. قال: فطلقت طلقة واحدة فولدت غلاماً، نظیفاً، منظفاً لم أر کحسن وجهه، فسماه علیاً وحمله النبی صلی الله علیه وسلم حتی أتاه إلی منزلها. قال علی بن الحسین: فوالله ما سمعت بشیء قط إلا وهذا أحسن منه. (أرجح المطالب فی مناقب علی بن أبی طالب، ص۴۲۶، منقول از مناقب فقیه ابن مغازلی)

"इमाम ज़ैनुल आबेदीन अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : हम ज़ियारते हुसैन अलैहिस्सलाम कर रहे थे, वहाँ बहुत सी औरतें भी मौजूद थीं। उनमें से एक औरत बढ़ कर हमारे पास आई। हमने उससे पूछा कि तू कौन है ? उसने जवाब दिया कि मैं कबीला नबी सादा से हूँ, मेरा नाम जबदा बिन अज़लान है। मैंने कहा : अगर तुझे कोई वाक़िया याद हो तो मुझ से बयान कर। वह कहने लगी : मुझसे अम्मारा बिन्त अबादा बिन्त नजीला बिन मालिक बिन अज़लान सादी कहती थी कि मैं एक दिन अरब की औरतों में मौजूद थी, इतने में अबू तालिब अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाये, उनके चेहरे से आसारे हजन नुमाया थे। मैंने पूछा : आपका क्या हाल है ? वह बोले फ़ातिमा बिन्त असद अलैहस्सलाम के दर्द लगे हैं, फिर **फ़ातिमा बिन्त असद अलैहस्सलाम का हाथ पकड़ कर का'बा में ले गए और कहा : ख़ुदा का नाम लेकर यहाँ बैठो। अभी वह अच्छी तरह बैठ न पायी थीं कि एक**

पाक पाकीज़ा खुबसूरत बच्चा पैदा हुआ जिससे ज्यादा खुशरु हमने न देखा था। अबूतालिब ने उसका नाम अ़ली रखा और आंहज़रत ने अपनी आगोश में लेकर बिन्ते असद के घर पहुंचा दिया। अ़ली बिन हुसैन फ़रमाते हैं : क़सम खुदा की, हमने उससे बेहतर कोई बात कभी नही सुनी।"

यह रिवायत अहले सुन्नत व जमाअत की दूसरी छोटी बड़ी किताबों में भी पायी जाती है और हदीस के अल्फाज़ बताते हैं कि विलादत हज़रत अ़ली इस क़दर मशहूर वाकिया था कि पर्दानशीं औरतें भी इस से वाकिफ़ थीं, फिर क्यूँ न इमाम चहारम इस हिकायत को सुनकर मुसर्रत का मुजाहिरा करें।

4. सुल्तानुल हिन्द ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी

ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (वफ़ात : 632 हिजरी) ने भी हज़रत की विलादत को का'बा में तसलीम किया है और अपने इस मशहूर क़तआ में जिम्मेदराना हैसियत से तख्लीलात को अल्फाज़ का जामा पहनाया है :

रोज़ यका बका'बा मुर्तुजा पैदा शद सुब्हानल्लाह
दरकुन व मकान जलवा नुमा पैदा शद सलवातुल्लाह
जिब्रील ज आसमां फरोद आमद व गफ्त ऐ ख़तम रसल
फरजंद बखाना खुदा पैदा शद वल्लाह बल्लाह

सनअत मुस्तजाद में यह वह माना खेज रुबाई है जिसके अल्फाज़ की तौजीह के लिए दफ्तर चाहिए और ख़्वाजा साहब ने इन्तेहाई वजद में जज्बात के जिस दरिया को कोजह में बंद किया है, वह उनकी अक़ीदतमंदी की पूरी नक्शाकशी कर रहा है। पहले मिसरा में जिक्रे मिलाद के साथ सुब्हानल्लाह इस बात का पता देता है कि का'बा में विलादत एक महीरुल अक़ूल एजाज है जो ताज्जुब अंगेज लब व लहजा में बयान करने के लायक़ है।

दुसरे मिसरा में मौलूद की नूरानियत को तमाम कोन व मकान का "जलवा नुमा" कह कर साबित किया है, ऐसी नूर बार हस्ती के लिए का'बा की चारदीवारी को फानूस बनना चाहिए। आख़री शेर में फिर मौलूदे का'बा के अजलाल में वही आसमानी को नज़म किया है कि मुल्क ने बक़सम मिसर वह विलादत सुनाकर तह्नियत अदा किया। पाकीज़ा फिकर हमारे मौज़ूअ को कुव्वत पहुंचाने में बहुत कुछ मुफीद है।

5. अल्लामा क़ाज़ी मुहम्मद बिन तलहा शाफ़ई رحمة الله عليه

कमालुद्दीन अबुसालिम काज़ी मुहम्मद बिन तलहा शाफ़ई رحمة الله عليه (वफ़ात : 652 हिजरी) भी का’बा को हज़रत अ़ली मुर्तुजा رضي الله عنه की विलादतगाह बताते हैं और अपनी किताब के बाब अव्वल, फसले अव्वल में रक़मतराज हैं :

ولد بالكعبة البيت الحرام وكان مولده بعد أن تزوج رسول الله بخديجة بثلث سنين وكان عمر رسول الله يوم ولادته ثمانية وعشرين سنة. (مطالب السئول فی مناقب آل الرسول، ص ۳۷، چھاپہ لکھنؤ، مطبع جعفری ۱۳۰۲ھ)

तर्जुमा : “आप का’बा में ख़ास बैतुल हराम के अन्दर पैदा हुए और आप की विलादत पैगम्बरे ख़ुदा صلى الله عليه وآله وسلم की ख़दीजा رضي الله عنها के साथ शादी के तीन बरस बाद हुई और पैगम्बरे ख़ुदा की उम्र उस दिन अठाईस बरस थी ।”

6. अल्लामा सिब्त इब्न जौज़ी رحمة الله عليه

शमसुद्दीन अबुल मुजफ्फ़र युसूफ बिन कज अ़ली मारुफ़ बा सिब्त इब्ने जौज़ी رحمة الله عليه (वफ़ात : 654 हिजरी) मुहक़्क़िकाना अंदाज से विलादत अ़ली मुर्तुजा पर रौशनी डालते हैं, मुलाहिज़ा हो :

روى أن فاطمة بنت أسد كانت تطوف بالبيت وهى حامل بعلى عليه السلام فضربها الطلق ففتح لها باب الكعبة فدخلت فوضعته فيها وكذا حكيم بن حزام ولدته أمه فى الكعبة. قلت: وقد أخرج لها أبو نعيم الحافظ حديثاً طويلاً فى فضلها الا أنهم قالوا فى اسناده روح بن صلاح ضعفه ابن عدى فلذلك لم نذكره. (تذكرة خواص الأمة فى فضائل الأئمة)

तर्जुमा : रिवायत है कि फ़ातिमा बिन्त असद رضي الله عنها तवाफ़ में मशगूल थीं और अ़ली رضي الله عنه के हमल से थीं। पस दर्दे ज़ह (Labour Pain) शुरू हुआ तो उनके लिए का’बा का दरवा हो गया और वह अन्दर दाख़िल हुयीं और बच्चा का’बा में पैदा हुआ और उसी तरह हकीम बिन हज़ाम को उसकी माँ ने का’बा में जना। मैं कहता हूँ कि उसको

हाफिज़ अबू नुएम ने रिवायत किया है और एक तुलानी हदीस उसके फ़ज़ाइल में नक़ल की है मगर उन्होंने सिलसिला सनद में रुह बिन सलाह का नाम लिया है जिसको इब्ने अदी ने ज़ईफ़ समझा है, इसलिए हम उसका ज़िक्र नहीं करते”

उस वक़्त तक जो कुछ भी साबित हुआ था, वह इस क़दर कि “ख़ानाए का’बा मौलिदे अ़ली था और आप के सिवा का’बा में कोई पैदा नहीं हुआ ।

लेकिन इस मक़ाम पर सिब्त इब्ने जौज़ी ने हकीम बिन हज़ाम की विलादत की बे-बुनियाद ख़बर की कलई खोल दी है और बताया है कि जिस सिलसिला रिवायत में इस ताबा जाद वाक़िया की ख़बर है, वह रावी जईफ़ होने से इस काबिल नहीं है कि सफहा क़रतास पर उसका ज़िक्र किया जाए ।

7. अल्लामा मोसुली शाफ़ई

शाफ़ई मसलक के शैख़ आरिफ़ बिल्लाह शरफुद्दीन अबू मुहम्मद उमर बिन सजाउद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल वाहिद मोसुली (वफ़ात : 657 हिजरी) अपनी किताब **“مناقب آل محمد المسمى ب النعيم المقيم لعترة النبأ العظيم”** में लिखते हैं :

مولده عليه السلام:في الكعبة المعظمة،ولم يولد بها سواه في طلقة واحدة.(مناقب آل محمد،ص:٥٥،طبع بيروت)

“अ़ली का’बा मोअज़्ज़मा में पैदा हुए, उनके अलावा कोई दूसरा वहाँ एक ही दर्द में पैदा नहीं हुआ।”

8. अल्लामा मुहम्मद बिन युसुफ़ शाफ़ई

मुहम्मद बिन युसुफ बिन मुहम्मद शाफ़ई (वफ़ात : 658 हिजरी) ने अपनी मशहूर किताब **“كفاية الطالب في مناقب علي بن أبي طالب”** में तस्लीम किया है कि मौला अ़ली की पैदाईश ख़ानाए का’बा में हुई । उन्होंने इमाम हाकिम की रिवायत नक़ल की है जिस में है :

ولد أمير المؤمنين على بن أبى طالب بمكة فى بيت الله الحرام .

(यानि अमीरुल मो'मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ मक्का में बैतुल्लाहुल हराम के अन्दर पैदा हुए)। (किफायतुल तालिब, 407 सफ़्हा, तबअ ईरान)

9. मौलाना रुम ؒ

मौलाना रुम ؒ (वफ़ात : 672 हिजरी) जिनके अजलाल में मुसलामानों के छोटे बड़े सब हम आवाज़ हैं और अहले सुन्नत व जमाअत का हर तबक़ा उनका नाम सुन कर सरनिया जख्म करता है, एक शेर में अपने ख़यालात का इज़हार अजब गिरां क़दर उन्वान से फ़रमाते हैं :

ऐ शहना दश्त नजफ़ अज तू नजफ़ दीदह शर्फ़

तू दरे व का'बा सदफ़ मस्तान सलामत मैकिनन्द

(मुलाहिजा हो : मनाक़िब (Virtues) तिर्मिजी, सफ़्हा : 88 सतरअन, छापा बम्बई,1321 हिजरी)

"यह वह मस्ताना कलाम है जिसका हर लफ्ज बहर उल्फत में डूबी हुई और हकीकत आ गयी है और मिसरा सानिया से साफ़ जाहिर है कि जब का'बा सदफ हुआ तो अ़ली ؓ दर आबदार जिसकी ज़ियाअ बारी से मजहब का रास्ता नजर आता है।"

10. अल्लामा ज़रन्दी हनफ़ी ؒ

जमालुद्दीन मुहम्मद बिन युसूफ बिन हसन बिन मुहम्मद ज़रन्दी हनफ़ी मदनी ؒ (वफ़ात : 757 हिजरी) अपनी मशहूर किताब "नज़म दूररस्सीमतैन फी फजायल अलमुस्तुफा व अलमुर्तुज़ा व अलबतुल व अलसिब्तैन" में लिखते हैं :

وأمه فاطمة بنت أسد بن هاشم بن عبد مناف ،وهي أول هاشمية ولدت لهاشمي منها ثم ولده مرتين.روى أنه لما ضربها المخاض أدخلها أبو طالب الكعبة بعد العشاء فولدت فيها على بن أبي طالب عليه السلام

.(نظم درر السمطين،القسم الثانى من السمط الأول،ص:۱۰۷،طبع المجمع العالمى لأهل البيت)

"सय्यिदना अ़ली की वालिदा फ़ातिमा बिन्त असद बिन हाशिम बिन अब्द मुनाफ थीं। यह पहली हाशिमया ख़ातून थीं जिन्होंने एक हाशमी के लिए औलाद पैदा की, उसके बाद दो मर्तबा उनके यहाँ मजीद विलादत हुई। बयान किया जाता है कि जब उनको दर्दे ज़ह (Labour Pain) उठा तो अबू तालिब ने उनको ईशा के बाद का'बा के अन्दर दाख़िल कर दिया और फिर वहीं का'बा ही में अ़ली बिन अबी तालिब की विलादत हुई।"

11. अल्लामा ज़रन्दी हनफ़ी

जमालुद्दीन मुहम्मद बिन युसूफ बिन हसन बिन मुहम्मद जरन्दी हनफ़ी मदनी (वफ़ात : 757 हिजरी) अपनी दूसरी मशहूर किताब **"معارج الوصول معرفة فضل آل الرسول والبتول"** में लिखते हैं :

وولد كرم الله وجهه فى جوف الكعبة يوم الجمعة الثالث عشر من رجب،قبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة على المشهور.(معارج الوصول،ص:۴۹،طبع مجمع احياء الثقافة الاسلامية)

"मशहूर रिवायत के मुताबिक़ सय्यिदना अ़ली का'बा के अन्दर जुम्आ के दिन 13/रजब को हिजरत से 23/साल पहले पैदा हुए।"

12. अल्लामा शहाबुद्दीन दौलताबादी

मल्कुल उलमा क़ाज़ी शहाबुद्दीन दौलताबादी (वफ़ात : 849 हिजरी) ज़िक्र विलादत में यह दिलचस्प वाक़िया लिख़ते हैं जो बेहद मुफ़ीद मतलूब है :

باورده اند که پیش ازین درون خانه کعبه دو مار بودند که ایشان را معیار الولد می گفتند وآن چنان بود که هر فرزند یکه در مکه متولد می شد روز سوم ولد رادرون کعبه می آوردند می نهادند آن مار که محک نام داشت از دیوار بیرون آمد اگر فرزند حلال زاده می بود بوئے میکرد وباز می گشت واگر فرزند حرام زاده می بود آن مار تف می زد وآن ولد بیهوش می شد حکم می کردند که ولد حرام زاده است چون شاه ولایت علی کرم الله وجهه تولد شد درون کعبه آورده اند که هر دو مار فرود آمدند وخواستند تا بوے کنند شاه هر دو مار را گرفت ودرید وپاره پاره کرد اهل مکه درغرش شدند که محک را کشت ودر گریه شدند مصطفی صلی الله علیه وسلم فرمود غمگین مشو پروردگار عالم محک عالم علی را گردانید دریک محلے دو محک نمی باشد هر که علی وفرزندان او را دوست دارد حلال زاده است وهرکه دشمن دارد تواند بود که حرام زاده است۔ (هدایة السعداء)

तर्जुमा : रिवायत की गयी है कि क़बल अर्जी का'बा में दो सांप रहा करते थे जिनको मेयार अलुलद कहते थे, इसलिए कि जो बच्चा मक्का में पैदा होता था, तीसरे दिन बच्चा को का'बा के अन्दर लाते थे और कह देते थे वह सांप के जिसका महक (कसौटी) नाम था, दीवार से जाहिर होकर बच्चा को सूंघता अगर बच्चा हलाली होता तो चला जाता और अगर हरामी होता तो वह फुंकार मारता जिससे वह बच्चा अज खा जाता। लोग समझ जाते कि हरामी है। जब शाह विलायत अ़ली ؑ अन्दरुन का'बा पैदा हुए तो रिवायत है कि दोनों सांप नीचे उतरे और सूंघना चाहते थे कि शाह विलायत ؑ ने दोनों को चीर डाला और टुकड़े टुकड़े कर दिए। मह वालों में गलगला हुआ कि कसौटी को फना कर दिया, सब रोने लगे। हज़रत सरवरे क़ायनात ﷺ ने फ़रमाया कि रंजीदा न हो, खुदावंद आलम ने तमाम आलम के लिए अ़ली ؑ को कसौटी क़रार दिया है और एक जगह दो कसौटिया नहीं रह सकतीं जो भी अ़ली ؑ और उनके दोनों बच्चों को दोस्त रखे वह हलालजादा है और जो दुश्मन रखे वह हो सकता है के हरामजादा हो।"

यह इबारत भी हमारे मतलूब के अस्बात में एक गिरान्क़दर इज़ाफ़ा है और मलकुल उलमा का हज़रत अ़ली ؓ को बार बार **'शाह विलायत'** लिखना इस बात की दलील है कि उलूल अ़म्र भी इनके सिवा कोई न था।

13. अल्लामा इब्ने सबाग मालिकी ؒ

इमाम अहले सुन्नत नूरुद्दीन अ़ली बिन अहमद मारुफ़ ब इब्ने सबाग मालिकी ؒ (वफ़ात : 855 हिजरी) भी अफ्जलियत को ज़ात अलविया से मख़सूस क़रार देते हैं :

ولد علی بمكة المشرفة بداخل البيت الحرام يوم الثالث عشر من شهر الله الاصم الرجب الفرد سنة ثلاثين من عام الفيل قبل الهجرة ثلث وعشر سنة وقيل بخمس وعشرين وقبل المبعث باثنى عشرة سنة وقيل بعشر سنين ولم يولد فی البيت الحرام قبله أحد سواه وهی فضيلة خصه الله تعالیٰ بها اجلالاً واعلاء لمرتبته واظهارا لتكرمته.(فصول المهمة چهاپه ايران،ص:١٤)

तर्जुमा : विलादत अ़ली ؓ मक्का मशरफा में अंदरुन का'बा 13 माह रजब को जो ख़ुदा का महीना है और जिसमें कशत व ख़ून हराम होने की वजह से आलात हरब की झंकार कभी सुनाई नहीं दी और जो सिलसिला में फर्द है आमूल फील के 30वे साल में हिजरत से 23 या 25 साल पहले और बास से दस बारह साल पहले आपके सिवा ख़ानाए का'बा में कोई शख़्स कभी पैदा नहीं हुआ। यह वह फ़ज़ीलत है कि हक़ तआला ने उन जनाब को उससे अजलाल मंजलत और आला मर्तबत और इजहार करामत में मख़सूस किया है।"

यह इबारत भी ख़ानाए का'बा को मौलिद अ़ली ؓ बताने में साबिक़ की इबारतों से मुत्तफ़िक़ लफ्ज़ और का'बा में विलादत को आपसे मख़सूस साबित करती है।

यह अल्फाज़ कि **"لم يولد فی البيت الحرام قبله احد سواه"** ख़ास तौर से तवज़्ज़ोह के काबिल हैं। मालूम हुआ कि अल्लामा सिबाग ؒ इस ताबाजाद ख़्याल पर कि "का'बा में हकीम हज़ाम भी पैदा हुवा" मिल्तफत होकर फ़ज़ीलत को ख़ास करते हैं।

यह कि "अ़ली ﷺ के क़ब्ल कोई शख़्स का'बा में मुत्वल्लिद नहीं हुआ" वह पुरज़ोर नफ़ा है जो हकीम बिन हज़ाम की विलादत के ख़्याल को नेस्तो नाबूद कर देती है और जिससे साबित होता है कि कोई हज़रत अ़ली ﷺ का इस फ़ज़ीलत में शरीक नहीं है। यह अल्फाज नाजरीन को आइन्दा मिला सालेह तिर्मिजी कशफी ﷺ और शाह वलीअल्लाह मुहद्दिस देहलवी ﷺ और फाजिल बदख़ुशानी वगैरह के कलम से भी मिलेंगे।

14. अल्लामा अब्दुल रहमान शाफई ﷺ

अल्लामा अब्दुल रहमान बिन अब्दुल सलाम सफूरी शाफ़ई ﷺ (वफ़ात : 894 हिजरी) अपनी किताब **"نزهة المجالس ومنتخب النفايس"** में लिखते हैं :

इमाम अ़ली ﷺ शिक्मे मादर से का'बा के अन्दर पैदा हुए और यह फ़ज़ीलत ख़ास तौर पर आपके लिए अल्लाह तआला ने मख़्सूस फ़रमा रखी थी।"

(नजहतुल मजालिस, जिल्द 2, सफ़्हा : 404, तबअ पाकिस्तान)

15. अल्लामा मौलाना अब्दुलरहमान जामी ﷺ

इमामुलख़्हात मौलवी अब्दुलरहमान जामी ﷺ (वफ़ात : 898 हिजरी) अपनी मशहूर किताब **"शवाहिदे नबुव्वत"** में तहरीर फ़रमाते हैं :

ولادت وے بمکہ بودہ است بعد از عام فیل بہفت سال وبعضے گفتہ اند ولادت وے درخانہ کعبہ بودہ است ودر وقت بعثت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پانزدہ سال بودہ است۔(شواھد النبوۃ)

तर्जुमा : उनकी पैदाईश मक्का में 7 आमुल फील में हुई और बाज कहते हैं कि आप का'बा में पैदा हुए और पैगम्बरे ख़ुदा ﷺ की रिसालत के वक़्त पन्दरह बरस के थे।" इस इबारत से किसी क़दर जअफ़ की बू आ रही है जो मुल्ला जामी जैसे मुहिब्बे अहले बैत की शान से बईद है। मुल्ला जामी वह बुजुर्ग थे जिन्होंने मदह अमीरुल मो'मिनीन ﷺ में "हश्त बंद" नज़्म करके मुआस्सिरीन से ख़राज तहसीन व आफरीन हासिल किया। हमें इस क़दर शगफ़ रखने वाले से मरकुमा बिल अंदाज तहरीर में शिकवा था जो कतब अहले सुन्नत में यह क़तआ देख कर जाता रहा :

सोए का’बा रोद शैख़ वमन बसवे नजफ
बहक़ का’बा कि आनजा मिरासत हक बतरफ
तफावते कि मियान मन अस्त व अवानेस्त
कि मन बसवे गहर रफतम व अव बसवे सदफ

(मुलाहिज़ा हो : मनाकब तिर्मिजी, सफ़्हा : 88, छापा बम्बई)

तर्जुमा : “शैख़ सिम्त का’बा को जाता है और मैं नजफ़ की तरफ। बरब का’बा में ही हक़ बजानिब हूँ। उसमें और मुझमें बड़ा फ़र्क है, मैं मोती की तरफ जाता हूँ और वह सदफ़ की सिम्त।”

ख़ुदा का शुक्र है कि ऐसे जलीलुल क़दर शख़्स के नज्म व नसर कलमात से साबित हुआ कि अ़ली मुर्तुजा ﷺ का’बा के अन्दर पैदा हुए उनके क़तआ में मशहूर अ़ली और का’बा में वही फर्क है जो मोती और सदफ में है।

16. मुल्ला हुसैन वाइज काशफी ﷺ

मुल्ला हुसैन वाइज काशफ़ी ﷺ (वफ़ात 910 हिजरी) जो अहले सुन्नत व जमाअत में बुलंद पाया आलिम समझे जाते हैं, रक़म तराज हैं :

در کتاب بشائر المصطفی از یزید بن قعنب نقل می کنند که من باعباس بن عبدالمطلب وجمعی از بنی عبدالعزی به ازاء بیت الحرم نشسته بودم که فاطمه بنت اسد بمسجد در آمد وحا لانکه حامل بود بعلی واز حمل وے مدت نه ماه گذشته بود وبطواف اشتغال نمود ناگاه اثر طلق وعلامت زادن بروے ظاهر شد ومجال برون رفتن از مسجد نماند گفت اے خداوند خانه بحرمت بانی این خانه که و لادت رابر من آسان کنی راوی گوید که فی الحال جدار کشاده شد وفاطمه بخانه درون رفت واز چشم ما غائب گشت وما خواستیم بخانه درائیم میسر نشد وروز چیارم بیرون آمد علی را بردست گرفته امام ابوداود نیاکنی آورده که پیش از علی وبعد ازعلی هیچکس را این شرف نبود که وے درخانه کعبه متولد شده باشد۔(روضة الشہداء،ص:۱۳۱،چھاپه نولکشور ۱۸۷۳ء)

तर्जुमा : किताब बशायर मुस्तुफा में यजीद बिन क़गब से मन्कूल है कि मैं अब्बास बिन अब्दुल मुतल्लिब رضی اللہ عنہ और औलाद अब्दुल अजी के एक गिरोह के साथ रुबरु ए बैतूल हराम बैठा था कि फ़ातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا मस्जिद में दाख़िल हुयीं दारां हालियां कि हमल से थीं और नौ महीने पुरे गुजर चुके थे, तवाफ़ कर रही थीं कि दर्दए ज़ह (Labour Pain) का असर जाहिर हुआ और वजअ हमाल की अलामतें ऐसी नुमाया हुयीं कि मस्जिद से बाहर जाने की हालत न रही ओ उन्होंने बारगाहे हमदियत में अर्ज किया : ऐ घर के मालिक तुझे उसके बनाने वाले के बुजुर्गी का वास्ता सख़्ती को मुझ पर आसान कर। रावी कहता है कि फ़ौरन दीवार शक हुई और फ़ातिमा رضی اللہ عنہا अन्दर चली गयीं और हमारे आँखों से गायब हो गयीं और हमने चाहा कि का'बा में हम भी दाख़िल हो जाएँ तो किसी तरह अन्दर पहुँच न सके। चौथे दिन निकलें तो अ़ली رضی اللہ عنہ को हाथों पर लिए हुए थीं। इमाम अबू दाउद बनाकनी رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं कि अ़ली رضی اللہ عنہ से पहले और उनके बाद किसी को यह शर्फ़ हासिल नहीं हुआ कि वह का'बा में पैदा हो।"

इस इबारत में दो बातें काबिले गौर हैं। एक तो यह कि जब फ़ातिमा बिन्त असद رضی اللہ عنہا का'बा में पहुँच गए तो हाजरीन ने भी चाहा कि हम अन्दर पहुँच वाक़िया विलादत देखें मगर किसी का दस्तर्स नहीं हुआ और का'बा में पहुँचने की कोशिश नाकाम रही। यह एजाज़ नहीं तो क्या है ? की एक औरत तो का'बा में आ जाती है और मर्दों की तदबीरें कारगर नहीं होतीं। दुसरे इमाम अबू दाउद رحمۃ اللہ علیہ की राय नोट करने के लायक़ है, वह भी का'बा में विलादत के हामी और आप से इस शर्फ़ को ख़ास कहते हैं।

17. अल्लामा नूरुद्दीन हलबी शाफ़ाई رحمۃ اللہ علیہ

अल्लामा नूरुद्दीन हलबी शाफ़ई رحمۃ اللہ علیہ (वफ़ात : 1014 हिजरी) हालात सरवर अकरम में रक़म तराज हैं :

وفی سنة ثلثين من مولده صلى الله عليه وسلم ولد علی بن أبی طالب كرم الله وجهه فی الكعبة.

(انسان العیون فی سیرۃ الأمین المأمون ملقب بہ سیرت حلبیہ ،جلد سوم،ص:۱۱۷،چھاپہ مصر ۱۲۸۰ھ)

तर्जुमा : “और 30 हिजरी में विलादत पैगम्बरे ख़ुदा ﷺ से अ़ली बिन अबी तालिब का’बा में पैदा हुए ।

यह तारीख़ी सबूत ऐसा अगर अन्क़दर है जिस के बाद कोई शक व शुबहा बाकी न रहना चाहिए।

18. अल्लामा नूरुद्दीन क़ारी رحمة الله عليه

नूरुद्दीन अबुल हसन अ़ली बिन सुल्तान मुहम्मद हरवी क़ारी رحمة الله عليه (वफ़ात : 1014 हिजरी) काज़ी अयाज की मशहूर किताब सीरते “अशफ़ा” की अपनी शरह में लिखते हैं :

“मुस्तदरक हाकिम में है कि मौला अ़ली رضي الله عنه ख़ानाए का’बा में पैदा हुए।”

(शरह अशफा, जिल्द 1, सफ़्हा 327, तबअ बैरुत)

मुल्ला अ़ली कारी رحمة الله عليه जैसे मुहक्किक व मुहद्दिष ने इमाम हाकिम رحمة الله عليه के कौल पर कोई ऐतराज नहीं किया बल्कि उस कौल मुतवातिर को क़बूल करते हुए इमाम अ़ली رضي الله عنه की विलादत का’बा में तस्लीम की।

19. शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिष देहलवी رحمة الله عليه

शैख़ अब्दुल हक़ बिन सैफुद्दीन मुहद्दिष देहलवी बुख़ारी رحمة الله عليه (वफ़ात : 1052 हिजरी) लिखते है :

گفته بودند که نام کرده بود اورا مادر وے فاطمه بنت اسد حیدره بنام پدرش اسد وحیدره نام اسد است وچوں قدوم آورد ابوطالب مکروه پنداشت این نام را پس تسمیه کرده است بعلی وتسمیه کرد او را پیغمبر صلی الله علیه وسلم بصدق کذا فی ریاض النضرة تکنیه کرده است به ابی الریحانتین ونیز لقب کرده است به بیضة البلد وبامین وشریف وبهادی ومهتدی وبذی الاذن الواعیه وبیعسوب الامه وگفته اند که بود ولادت وے در جوف کعبه۔(مدارج النبوة)

तर्जुमा : अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ का नाम उनकी माँ फ़ातिमा बिन्त असद ﷺ ने **'हैदर'** अपने बाप असद के नाम पर रखा और जब अबू तालिब ﷺ आये और उनको यह नाम पसंद न आया तो उन्होंने **'अ़ली'** ﷺ नाम रखा और पैगम्बरे खुदा ﷺ ने **'सादीक़'** नाम रखा जैसा कि रियाजुन्नज़रह में है और कुनियत रखी अबुल रयहानतीन, नीज़ बैजतुल बल्द और अमीन और शरीफ़ और हादी और मह्तदी और जुलअजन अल्वाइया और यासूबुल अमा लक़ब रखे और रावियों का बयान है कि विलादत इन हज़रत की अंदरुन का'बा हुई।"

20. फाजिल सईद गुजराती ﷺ

फाजिल सईद गुजराती ﷺ जो अजला अहले सुन्नत में हैं शैख़ क़ुतुबुद्दीन हनफी ﷺ की मशहूर तसनीफ़ "किताबुल अलाम बा अलाम मस्जिदुल्लाह अल हराम" के हाशिये में तहरीर फ़रमाते हैं"

قوله:وفي مكة مواضع مباركة ومواليد متيمنة ومساجد مشهورة فمنها مولد علي بن ابي طالب رضي الله عنه وهو بالقرب من مولد النبي صلى الله عليه وسلم بقرب جبل ابي قبيس في قفاه في شعب يقال له شعب علي به مسجد يصلي فيه أقول سبحنك هذا بهتان عظيم .مولد علي كرم الله وجهه اصل الكعبة وجوفها كما يشحن به الروايات من الثقات وأمثال هذه المقالات من وضع المتعصبين لأهل بيت النبوة (حاشيه كتاب الأعلام)

तर्जुमा : "कौल मुसन्निफ़ : और मक्का में मुबारक़ जगहें और मक़ामात पैदाईश और मशहूर मस्जिदें हैं,मन्जुमला इस के मक़ाम पैदाईश हज़रत अ़ली बिन अबी तालिब ﷺ है जो मौलिद नबी से करीब है और क़ोह अबू क़त्बीस के नजदीक उसकी पुश्त पर वाक़ेअ है जिस **'शअबे अ़ली** ﷺ' कहते हैं। वहाँ एक मस्जिदे बनी हुई है जिसमें लोग नमाज़ पढ़ते हैं। मैं कहता हूँ : ऐ खुदा पाक वमंजह है तो यह अजीम बोहतान है मौलिदे अ़ली ﷺ खुद का'बा के अन्दर है जैसा कि सक़ात की रिवायतें बताती हैं। ऐसे अक़वाल अहले बैत नबुव्वत से ताअसुब करने वालों ने घड लिए हैं।

21. अल्लामा मुहम्मद सालेह हुसैन अकबराबादी عليه رحمة الله

मीर मुहम्मद सालेह हुसैनी तिर्मिजी कशफी बिन अब्दुल्लाह अकबराबादी عليه رحمة الله (वफ़ात : 1160 हिजरी) मनाक़िब (Virtues) में लिखते हैं :

از یزید بن قعنب مرویست که من باعباس بن عبدالمطلب وجمعی از بنی عبدالعزی به ازاء بیت الحرم نشسته بودم که فاطمه بنت اسد بمسجد در آمد وحا لانکه حامل بود بعلی واز حمل وے مدت نه ماه گذشته بود وبطواف اشتغال نمود ناگاه اثر طلق وعلامت زادن بروے ظاهر شد ومجال برون رفتن از مسجد نماند گفت اے خداوند خانه بحرمت بانی این خانه که ولادت رابر من آسان کنی راوی گوید که فی الحال جدار کشاده شد وفاطمه بخانه درون رفت واز چشم ما غائب گشت وما خواستیم بخانه درائیم میسر نشد وروز چهارم برون آمد علی را بردست گرفته امام ابوداود نباکنی آورده که پیش از علی وبعد ازعلی هیچکس را این شرف نبود که وے درخانه کعبه متولد شده باشد۔(مناقب ترمذی کشفی،ص:۸۷،چھاپه بمبئی ۱۳۲۱ھ)

तर्जुमा : “यजीद बिन क़गब से मन्कूल है कि मैं अब्बास बिन अब्दुल मुतल्लिब رضی الله عنه और औलाद अब्दुल अजी के एक गिरोह के साथ रुबरूए बैतुल हराम बैठा था कि फ़ातिमा बिन्त असद رضی الله عنها मस्जिद में दाख़िल हुयीं दारां हालांकि हमल से थीं और नौ महिना पुरे गुजर चुके थे, तवाफ़ कर रही थीं कि दर्दे ज़ह (Labour Pain) का असर जाहिर हुआ और वज़अ हमल की अलामतें ऐसी नुमाया हुयीं कि मस्जिद से बाहर जाने की हालत न रही तो उन्होंने बारगाहे हमदीयत में अर्ज किया : ऐ घर के मालिक तुझे उसके बनाने वाले की बुजुर्गी का वास्ता सख़्ती को मुझ पर आसान कर। रावी कहता है कि फ़ौरन दीवार शक हुई और फ़ातिमा رضی الله عنها अन्दर चली गयीं और हमारी आँखों से गायब हो गयीं और हमने चाहा कि का'बा में हम भी दाख़िल हो जाएँ तो किसी तरह अन्दर पहुँच न सके। चौथे दिन निकलीं तो अ़ली رضی الله عنه को हाथों पर लिए हुई थीं। इमाम अबू दाउद बनाक़नी عليه رحمة الله कहते हैं कि अ़ली رضی الله عنه से पहले और उनके बाद किसी को यह शर्फ़ हासिल नहीं हुआ कि वह का'बा में पैदा हो।”

फाजिले मुसन्निफ़ ने "रौज़तुश्शुहदा" की इबारत नक़ल की है जो क़ाबिल के सफहात में गुजर चुकी है। किताब के दुसरे सफहा में अपने तख़ीलात को नज्मन यूँ अदा करते हैं :

अ़ली बरहमा आलम अमीर आमद अ़ली	**दर फजायल बे-नजीर आमद**
आं कि बरदोश पयम्बर पा निहाद	**आं अ़ली की मादरश दर का'बा जाद**
आंचा अजगैब अस्त बे ऐब आमदह	**आं अ़ली कि नामश अजगैब आमदह**

(मनाक़िब तिर्मिजी, सफ़्हा : 89)

22. अल्लामा मिर्जा मुहम्मद बद्ख़ाशानी ﷺ

मिर्जा मुहम्मद बिन मातमद ख़ान बद्ख़्शानी ﷺ अपनी दो किताबों में निहायत पुरजोर लफ्जों में का'बा में अलवी विलादत का सबूत देते हैं :

पहली किताब :

كانت ولادة أمير المؤمنين كرم الله وجهه يوم الجمعة الثالث عشر من رجب بعد عام الفيل بثلثين سنة بمكة فى البيت الحرام وسمته أمه حيدره،(مفتاح النجاء فى مناقب آل العباء)

तर्जुमा : और विलादत अमीरुल मो'मिनीन ﷺ की 13/ रजब बरोज़ जुम्आ 30 आमुलफ़ैल बमक़ाम मक्का का'बा के अन्दर वाक़ेअ हुई और उनकी माँ ने उनका नाम हैदर रखा।"

दूसरी किताब :

फाजिल बद्ख़शानी को मिफताहुल ख़जा की तदवीन के बाद किताब के मुख़्तसर करने का ख़याल पैदा हुआ और सिर्फ इन मुतालिब को जो सेहत और एतबार के लिहाज से नाक़ाबिले इंकार थे, अलहिदा किताबी सूरत में जमा करके फ़जाइल अहले बैत की एक दूसरी ख़िदमते अंजाम दी और उस तल्ख़ीसुल मिफताह में भी अपने मम्दुह को मौलूद का'बा तस्लीम करने में अजर न हुआ। मुलाहिजा हो दूसरी इबारत :

كانت ولادة على كرم الله وجهه يوم الجمعة لثلث عشر خلت من رجب بعد عام الفيل بثلثين سنة بمكة وروى أنه ولد فى البيت الحرام ولم يولد فى البيت أحد سواه ولا قبله ولا بعده وهى فضيلة خصه الله بها.(نزل الأبرار بما صح من مناقب اهل البيت الأطهار)

तर्जुमा : "हज़रत अ़ली ﷺ की विलादत बरोज़ जुम्आ 13/रजब 30 आमुल फील में बमक़ाम मक्का वाक़ेअ हुई और रिवायत है कि वह जनाब ख़ानाए का'बा में पैदा हुए और हुजरा का'बा में कोई न उनसे पहले पैदा हुआ, न बाद। यह वह फ़ज़ीलत है जिससे खुदा ने उन्हीं को महसूस कियह था।"

23. मौलाना शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी

शाह वलीउल्लाह अहमद बिन अब्दुल रहीम मुहद्दिष देहलवी (वफ़ात : 1176 हिजरी) जो शाह अब्दुल अजीज देहलवी मुसन्निफ़ "तोहफ़ाए असना अशरिया" के वालिद हैं और जो हिंदुस्तान में बारहवीं सदी के मुजद्दिद माने गए हैं, वह तहरीर फ़रमाते हैं :

قد تواترت الأخبار أن فاطمة بنت اسد ولدت أمير المؤمنين علياً فى جوف الكعبة فانه ولد يوم الجمعة الثالث عشر من شهر رجب بعد عام الفيل بثلثين سنة فى الكعبة ولم يولد فيها أحد سواه قبله ولا بعده.(ازالة الخفاء)

तर्जुमा : "अख़बारे मुतवातिर से साबित है कि अमीरुल मो'मिनीन अ़ली फ़ातिमा बिन्त असद के बतन से का'बा के अन्दर 13/रजब बरोज़ जुम्आ 30 आमुल फील में पैदा हुए और का'बा में उनके सिवा कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ, न उनसे पहले, न बाद।"

इस इबारत में मुहद्दिष देहलवी ने जिम्मदराना हैसियत से वाक़िआ विलादत को ख़बरे मुतवत्तिर तस्लीम किया है और उसके साथ का'बा में आपके गैर की विलादत की पुरज़ोर नफ़ी की है जिस से मुख़ालिफ़ के तमाम ख़यालात का क़ला क़मा होकर हक़ीक़त बे-नकाब नजर आती है।

शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी अपनी एक दूसरी किताब "कुर्रतुल एनैन" में भी विलादत मौला अ़ली का ज़िक्र इस तरह करते हैं :

"इमाम अ़ली के फज़ायल व मनाक़िब (Virtues) बे-शुमार हैं, आप पहले हाशमी हैं जिनकी वालिदा माजिदा भी हाशिमा हैं, आपकी पैदाईश ख़ानाए का'बा में हुई यह एक ऐसी फ़ज़ीलत है जो आप से पहले किसी के हिस्से में नहीं आयी।"

(कुर्रतुल ऐनैन बतफ़जीलुल शैख़ैन, सफ़्हा 138, तबअ देहली)

24. मौलाना नवाब सिद्दीक हसन ख़ान भोपाली

अहले हदीष आलिम नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान भोपाली (वफ़ात : 1307 हिजरी) ने ख़ुलफ़ाए राशिदीन के मनाक़िब (Virtues) में एक क़ाबिले क़दर किताब लिखी है। इसमें लिखते हैं :

"सय्यिदना अ़ली बिन अबी तालिब का ज़िक्र। वह इब्ने अम रसूलुल्लाह हैं, अल्लाह की बे-नियाम तलवार हैं, अजायब व गरायब का मजहर हैं और अपने दुश्मन पर ग़ालिब रहने वाले शेरे ख़ुदा हैं, विलादत उनकी मक्का मुकर्रमा में अन्दर बैतुल्लाह के हुई, उनसे पहले कोई बैतुल्लाह के अन्दर मौलूद नहीं हुआ"

(तकरीमुल मुमेनीन बतकवीम मुनाकिबुल ख़ुलफ़ाउर्राशिदीन, स 99, तबअ लाहौर)

25. शैख़ मोमिन शबलन्जी

शैख़ मोमिन शबलंजी (वफ़ात : 1308 हिजरी) अपनी किताब "नूरुल अबसार फ़ी मनाक़िब (Virtues) आल बैतुल मुख़्तार" में लिखते हैं :

فصل فى ذكر مناقب سيدنا على بن أبى طالب،ابن عم الرسول،وسيف الله المسلول.ولد رضى الله عنه بمكة داخل البيت الحرام على قول يوم الجمعة ثالث عشر المحرم رجب سنة ثلاثين من عام الفيل قبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة،ولم يولد فى البيت الحرام قبله أحد سواه.قاله ابن الصباغ.(نورالأبصار،ص:١٨٣،طبع بيروت)

यह फ़स्ल है सय्यिदना अ़ली बिन अबी तालिब رضي الله عنه के मनाक़िब (Virtues) के बयान हैं। हज़रत अ़ली मुर्तुजा رضي الله عنه रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم के चचाजाद भाई और तलवार बे-नयाम हैं।

आप आमुल फील के तीसवीं साल जुम्आतुल मुबारक के दिन 13/रजब को ख़ानाए का'बा के अन्दर पैदा हुए और उससे पहले आपके अलावा का'बा में किसी की विलादत नहीं हुई। यही बात इब्ने सिबाग़ رحمة الله عليه ने लिखी है।"

26. असरे हाजिर के एक मशहूर सलफी आलिम का कौल :

मआसिर मुसन्निफ़ और मुअर्रिख़ (Historian) **डॉक्टर अ़ली मुहम्मद मुहम्मद सलाबी** (विलादत : 1963 ईस्वी) अपनी किताब "अस्माउल मतालिब फी सीरते अमीरुल मो'मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब : शख़्सियत व असरह" में लिखते हैं :

وذكر الفاكهي:بأن علياً أول من ولد من بني هاشم في جوف الكعبة وأما الحاكم فقال:ان الأخبار تواترت بأن علياً ولد في جوف الكعبة. (أسمى المطالب في سيرة أمير المؤمنين علي بن أبي طالب،ص ٢٦،طبع القاهرة)

"फाकही ने ज़िक्र किया है कि बनू हाशिम की पहली शख़्सियत जो का'बा के अन्दर पैदा हुई, वह सय्यिदना अ़ली رضي الله عنه की थी। इमाम हाकिम رحمة الله عليه ने लिखा है कि मुतवातिर रिवायत से यह बात साबित है कि सय्यिदना अ़ली رضي الله عنه की विलादत का'बा के अन्दर हुई।"

मौलूदे का’बा ईसाई नुक्ता नजर से

अमीरुल मो’मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब صلوات اللہ وسلامہ علیہ की का’बा में विलादत न सिर्फ़ इस्लामी नुक्ता नजर से साबित है बल्कि अब्दुल मसीह अनताकी भी जो मुल्के शाम के क़दीम शहर जलब के ईसाई आलिम हैं, अपने मअर कि आराक़सीदा में जो पांच हज़ार नवे अरबी अशआर पर मुशतमिल है, एतराफ करते हैं :

في رحبة الكعبة الزهرا قد البثقت
أنوار طفل وضائت في مغانيها
قالوا ابن من فأجيبوا أنه ولد
من نسل هاشم من اسمى ذراريها
هنوا أباطالب الجواد والده
و الأم فاطمة هيوا نهنيا

तर्जुमा : का’बा मुअज्जिमा की फ़िजा में एक नौ मौलूद बच्चे के चेहरे की छूट फ़ैल गयी और एक मर्तबा उसके दर व दीवार को रोशन कर दिया। लोग पूछते हैं : यह किसका फ़रजंद है? बतला दो कि यह नबी हाशिम के ख़ानदान की बुलंद तरीन नस्ल का मुबारक बच्चा है। उसके बाप सख़ी और जव्वाद अबू तालिब को इस फ़रजंद की तहनियत पेश करो और चलो चल कर उसकी माँ फ़ातिमा बिन्त असद को मुबारकबाद दें।”

कसीदा तवील है और वाक़िया विलादत पे दर पे अशआर में नज़्म किया गया है जिसकी तफसील की यहाँ चंदां जरुरत नहीं। इन अशआर के साथ फ़ाजिल शायर ने जो शरह की है, वह बहुत उम्दा है।

كـانـت ولادـة سيـدنـا ومولانا أمير المؤمنين فى العام الثلاثين لولادة الـمـصـطـفـى عـليه وعلى آلهما الصلوة والسلام على ما حقق المحققون فيـكـون ولادتــه الشـريـفة حـول ٦٠١ مسيـحية ومن بشائر سعده عليـه صـلـوات الـلـه انـه ولـد فـى الـكـعبة ولدته أمه فيها فاستبشر بذلک أبوه وعمومته وعند ولادته الشريفة دعته أمه حيدره ومعنى هذه الكلمة الأسد فكأنها ارادت أن تسميه باسم أبيها.

तर्जुमा : हमारे सरदार और आक़ा की पैदाईश अरबाब तहक़ीक़ के इरशाद के मवाफिक़ हज़रत रसूलुल्लाह ﷺ की विलादत से 30 साल बाद हुई और उस हिसाब से आपकी विलादत तक़रीबन 601 ईस्वी में वाक़ेअ हुई और पैदाईश की मसउद खुसुसियात में से यह है कि आप का'बा के अन्दर पैदा हुए और आपकी विलादत से बाप, चचा सब ही खुश हुए। माँ ने हैदर कह कर पुकारा जिसके माना शेर के हैं गोया मक़सूद यह था कि अपने बाप के नाम पर नाम रखें।"

इस इबारत से साफ जाहिर है कि का'बा में विलादत का होना इतनी महदूद हैसियत नहीं रखता कि उसका असर सिर्फ़ इस्लामी लिट्रेचर तक हो बल्कि इस कदर गैर मामूली शोहरत पा चूका है कि ख़्वाह-मख़्वाह ईसाईयों को उसे तस्लीम करना पड़ा और का'बा में विलादत के क़ाइल होने वालों को मुहक्किक का ख़िताब मिला।

تاريخ الخلفاء الراشدين (٤)

أسمى المطالب في سيرة أمير المؤمنين

علي بن أبي طالب

كرم الله وجهه

شخصيته وعصره

تأليف

دكتور علي محمد محمد الصلابي

الجزء الأول

دار الفجر للتراث

خلف الجامع الأزهر - القاهرة

٥١٤٢٢٤٨ - ٥١٤٧١٧٩

قالت: كان بيني وبينه شيء فغاضبني فخرج فلم يقل[1] عندي، فقال ﷺ لإنسان: «انظر أين هو؟» فجاء فقال يا رسول الله؟ هو في المسجد راقد، فجاء رسول الله ﷺ وهو مضطجع وقد سقط رداءه عن شقه، وأصابه تراب، فجعل رسول الله ﷺ يمسحه عنه ويقول: «قم أبا تراب»[2]، ومن رواية البخاري: والله ما سماه إلا النبي[3]، ومن كُناه: أبو الحسن والحسين وأبو القاسم الهاشمي[4]، وأبو السبطين[5].

٣- لقبه: أمير المؤمنين، ورابع الخلفاء الراشدين[6]

ثانيا: مولده :

اختلفت الروايات وتعددت في تحديد سنة ولادته، فقد ذكر الحسن البصري أن ولادته قبل البعثة بخمس عشرة أو ست عشرة سنة[7]، وذكر ابن اسحاق أن ولادته قبل البعثة بعشر سنين[8] ، ورجح ابن حجر قوله[9]، وذكر الباقر محمد بن علي قولين: الأول: كالذي ذكره ابن اسحاق، ورجحه ابن حجر وهو أنه ولد قبل البعثة بعشر سنين[10] ، وأما الثاني: فيذكر أنه ولد قبل البعثة بخمس سنين[11]، وقد ملت إلى قول ابن حجر وابن اسحاق فيكون مولده على التحقيق قبل البعثة بعشر سنين[12]، وذكر الفاكهي[13]، بأن عليًا أول من ولد من بني هاشم في جوف الكعبة، وأما الحاكم فقال: إن الأخبار تواترت بأن عليًا ولد في جوف الكعبة[14].

(١) من قال يقيل فالقيلولة: الظهيرة وتكون بمعنى النوم في الظهيرة اللسان (١١/٥٧٧).
(٢) مسلم في صحيحه رقم ٢٤٠٩.
(٣) البخاري في صحيحه رقم (٤٤١، ٣٧٠٣، ٣٢٨٠).
(٤) البداية والنهاية (٧/٢٢٣).
(٥) أسد الغابة (٤/١٦) والسبطين: الحسن والحسين.
(٦) تاريخ الإسلام للذهبي ص٣٧٦، البداية والنهاية (٧/٢٢٣)، خلاصة تهذيب الكمال (٢/ ٢٥٠).
(٧) المعجم الكبير للطبراني (١/٥٤) رقم ١٦٣ بسند مرسل.
(٨) السيرة النبوية (١/٢٦٢) دون إسناد.
(٩) الإصابة (٢/٥٠١) ترجمة علي.
(١٠) المعجم الكبير للطبراني (١/٥٣) رقم ١٦٥ إسناده حسن.
(١١) المصدر السابق (١/٥٣) رقم ١٦٦ إسناده حسن إلى محمد الباقر حيث أرسلها.
(١٢) فتح الباري (٧/١٧٤)، الإصابة (٢/٥٠٧).
(١٣) صاحب أخبار مكة، حقق الكتاب عبد الملك بن دهيش.
(١٤) [illegible]

مناقب
الامام علي بن أبي طالب عليه السلام

للفقيه
ابي الحسن علي بن محمد الشافعي
الشهير بابن المغازلي

مولده (عليه السلام):

٣ ـ أخبرنا أبو طاهر محمّد بن عليّ بن محمّد البيِّع[1] قال: أخبرنا أبو عبد الله أحمد بن محمّد بن عبد الله بن خالد الكاتب قال: حدَّثنا أحمد بن جعفر بن محمّد بن سلم الخُتُّليّ[2] قال: حدَّثني عمر بن أحمد بن روح الساجيُّ، حدَّثني أبو طاهر يحيى بن الحسن العلويّ قال: حدَّثني محمّد بن سعيد الدارميُّ، حدَّثنا موسى بن جعفر عن أبيه، عن محمّد بن عليّ، عن أبيه علي بن الحسين قال: كنت جالساً مع أبي ونحن زائرون قبر جدّنا (عليه السّلام) وهناك نسوان كثيرة، إذ أقبلت امرأة منهنَّ فقلت لها: من أنتِ يرحمك الله؟ قالت: أنا زيدة بنت قَريبة بن العجلان من بني ساعدة، فقلت لها: فهل عندك شيء تحدِّثينا؟ فقالت: إي والله، حدَّثتني أمّي أمُّ عمارة بنت عبادة بن نضلة بن مالك بن العجلان الساعديّ أنّها كانت ذات يوم في نساء من العرب، إذ أقبل أبو طالب كئيباً حزيناً، فقلت له: ما شأنك يا أبا طالب؟ قال: إنَّ فاطمة بنت أسد في شدّة المخاض، ثمَّ وضع يديه على وجهه.

فبينما هو كذلك، إذ أقبل محمّد (صلّى الله عليه وسلّم) فقال له: ما شأنك يا عمُّ؟ فقال: إنَّ فاطمة بنت أسد تشتكي المخاض، فأخذ بيده وجاء وهي معه، فجاء بها إلى الكعبة فأجلسها في الكعبة، ثمَّ قال: اجلسي على اسم الله قال: فطلقت طلقة فولدت غلاماً مسروراً نظيفاً منظّفاً، لم أرَ كحسن

(١) هو ابو طاهر محمد بن علي بن محمد بن عبد الله البغدادي البيع: بيع السمك (٣٨٥ ـ ٤٥٠) كان ثقة، توفي سلخ ربيع الأخر سنة خمسين وأربعمائة ببغداد، على ما في اللباب ١٩٨/١، تاريخ بغداد ١٠٦/٣.

(٢) ضبطه الذهبي في المشتبه بخاء مضمومة ومثناة ثقيلة (مضمومة أيضاً) قال: عمر بن جعفر بن احمد بن سلم الختلي واخوه احمد مشهوران.

وقال الفيروز آبادي: وختل كسكر كورة بما وراء النهر منها. . . عمر وأحمد ابنا جعفر، وعليه

وجهه، فسماه أبو طالب علياً، وحمله النبيُّ (صلّى الله عليه وآله) حتّى أدّاه إلى منزلها[1].

قال عليُّ بن الحسين(عليهما السّلام): فوالله ما سمعت بشيء قط إلّا وهذا أحسن منه.

كنيته (عليه السلام):

له كنيتان إحداهما: أبو الحسن

٤ ـ أخبرنا أبو بكر أحمد بن محمّد بن عبد الوهّاب بن طاوان[2] قال: أخبرنا القاضي أبو الفرج أحمد بن عليّ بن جعفر بن محمّد بن المعلّى الخُيرطي[3] قال: سمعت أبا عبد الله محمّد بن الحسين بن سعيد الزعفراني المعدّل قال: حدَّثنا أحمد بن أبي خيثمة قال: سمعت أبي يقول: عليٌّ بن أبي طالب أبو الحسن.

والأُخرى: أبو تراب

٥ ـ أخبرنا أحمد بن محمّد بن عبد الوهّاب بقراءته عليَّ وأنا أسمع في ذي الحجّة من سنة خمس وثلاثين وأربعمائة قال:أخبرنا أحمد بن عليّ بن جعفر ابن محمّد بن المعلّى الخيوطيُّ الحافظ قال: حدَّثنا أبو عبد الله محمّد بن الحسين بن سعيد الزعفرانيُّ العدل الواسطيّ قال: حدَّثنا يحيى بن جعفر بن أبي طالب قال: أخبرنا عبد الرحمن بن حفص حدَّثنا عبد الله بن زياد عن بن

---

(١) اخرجه العلامة ابن الصباغ المالكي في الفصول المهمة ١٢ نقلاً من كتاب ابي المعالي الفقيه المالكي، واخرجه الحافظ ابو عبد الله البلخي في كتابه على ما في تلخيصه ١١ ط بمبيء نقلاً عن مؤلفنا ابن المغازلي الشافعي، وهكذا اخرجه العلامة الامرتساري في ارجح المطالب ٣٨٨ ط لاهور.

(٢) قال في اللباب ٢/٢٧٠: الطاواني نسبة الى طاوان، جد ابي بكر احمد بن محمد بن عبد الوهاب بن طاوان البزار الواسطي الطاواني.

(٣) قال في الأنساب ٥/٢٦٤: الخيوطي بضم الخاء والياء، نسبة إلى خيوط، منها القاضي ابو

نظم درر السمطين

في فضائل المصطفى (صلى الله عليه وآله) والمرتضى والبتول والسبطين (عليهم السلام)

تأليف

جمال الدين محمّد بن يوسف بن الحسن بن محمّد الزرندي الحنفي المدني

المجمع العالمي لأهل البيت

القرابة، قديم الهجرة، عظيم الحقّ، زوج فاطمة وأبا حسن وحسين، لكان في ذلك فضل كثير فكيف وله من المناقب والفضائل ما ليس لغيره.

٨ ـ وروي أنّ رجلاً قال لابن عبّاس: سبحان الله ما أكثر مناقب عليّ وفضائله إنّي لأحسبها ثلاثة [أربعة][1] آلاف قال: أوَ لا تقول إنّها لثلاثين ألف أقرب[2].

٩ ـ وقال الإمام أحمد بن حنبل: ما جاء لأحدٍ من أصحاب رسول الله ﷺ من الفضائل ما جاء لعليّ بن أبي طالب ﷺ[3].

١٠ ـ وأمّه فاطمة بنت أسد بن هاشم بن عبد مناف وهي أوّل هاشمية وَلدت هاشمي منها ثم ولده مرتين روي أنّه لما ضربها المخاض أدخلها أبو طالب الكعبة بعد العشاء فولدت فيها عليّ بن أبي طالب ﷺ[4] ليلة الأحد وقيل ليلة الجمعة وقيل يوم الجمعة الثالث عشر من رجب قبل المبعث باثنتي عشرة سنة وتسعمئة وعشر لدى الوثنيّين وقيل ولد قبل المبعث بعشر سنين بعد عام الفيل بثلاثين سنة وقيل بثمان وعشرين سنة وقبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة وقيل بخمس

---

(١) بين المعقوفتين من (ب).

٢ ـ رواه الاربلي في كشف الغمّة: ١٠٩/١ باسناده عن الخوارزمي.

٣ ـ ذكره ابن عساكر في تاريخ دمشق: ٤١٨/٤٢ ثم قال: قال الشيخ أبوبكر البيهقي: وهذا الأنّ أمير المؤمنين عليّاً عاش بعد سائر الخلفاء حتى ظهر له مخالفون وخرج عليه خارجون فاحتاج من بقي من الصحابة إلى رواية ماسمعوه في فضائله ومراتبه ومناقبه ومحاسنه ليردّوا بذالك عنه ما لا يليق به من القول والفعل وهو أهل كل فضيلة ومنقبة ومستحق لكل سابقة ومرتبة ولم يكن أحد في وقته أحق بالخلافة منه وكان في قعوده عن الطلب قبله محقاً وفي طلبه في وقته مستحقاً وهو كما قال أحمد لم يزل عليّ بن أبي طالب مع الحقّ والحقّ معه حيث كان.

٤ ـ [illegible] ٤٢٥/١٠ ح ٣٥٥٤.

الفصول المهمة

في معرفة الأئمة

تأليف

الشيخ الإمام العلامة والبحر الفهامة

علي بن محمد بن أحمد المالكي المكي الشهير بابن الصباغ

المتوفى سنة ٨٥٥ هـ

حققه ووثق أصوله وعلق عليه

سامي الغريري

المجلد الأول

الخوارزمي في كتابه المناقب[1].

وُلِدَ عليٌّ[2] ﷺ بمكة المشرّفة بداخل[3] البيت الحرام في يوم الجمعة الثالث عشر من شهر الله الأصمّ رجب الفرد سنة ثلاثين من عام الفيل قبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة، وقيل بخمس وعشرين[4]، وقيل المبعث باثني عشرة

---

(١) هو الحافظ الموفّق بن أحمد بن محمّد (أو إسحاق) البكري المكي أخطب خوارزم الحنفي، يكنى بأبي المؤيد وأبي محمّد وأبي الوليد (٤٨٤ ـ ٥٦٨ هـ) أصله من مكة المكرمة. أخذ العربية عن الزمخشري بخوارزم، وتولّى الخطابة بجامعها، وله خطب وشعر وكتاب «مناقب أمير المؤمنين عليّ بن أبي طالب» انظر ص ٢٢٨. وله كتاب آخر سمّاه «الأربعين» وكتاب «مقتل الحسين ﷺ» وغيرهما. (انظر الأعلام للزركلي: ٧/ ٢٣٣، ومعجم المؤلّفين: ١٣/ ٥٢، والغدير: ٤/ ٣٩٨، وأنباه الرواة: ٣/ ٢٣٢).

(٢) ولد عليّ ﷺ في داخل الكعبة وكرّم الله وجهه عن السجود لأصنامها فكأنّما ميلاده ثمّة إيذاناً بعهدٍ جديدٍ للكعبة وللعبادة فيها. (عبقرية الإمام لعباس محمود العقّاد: ٤٣). وقال الدهلوي الشهير بشاه وليّ الله والد عبدالعزيز الدهلوي مصنّف «التحفة الإثنا عشرية في الردّ على الشيعة» قال في كتابه إزالة الخفاء: تواترت الأخبار أنّ فاطمة بنت أسد ولدت أمير المؤمنين ﷺ علياً في جوف الكعبة. فإنه ولد في يوم الجمعة ثالث عشر من شهر رجب بعد عام الفيل بثلاثين سنة في الكعبة، ولم يولد فيها أحد سواه قبله ولا بعده. (انظر الغدير: ٦/ ٢٢).

(٣) في (ب): في داخل.

(٤) أخرج هذه الفقرة شيرويه الديلمي الفردوس بمأثور الخطاب: ٣/ ٣٣٢ ط دار الكتاب العربي، والعلّامة الحلّي في كشف اليقين: ١٧، والعلّامة المجلسي في البحار: ٣٥/ ١٦، والسيّد ابن طاووس في الطرائف: ١٥٤ وابن شهرآشوب في المناقب: ٢/ ١٨٠، وعبدالرؤوف المناوي المصري في كنوز الدقائق: ١٨٨، والشيخ جلال الدين السيوطي في الجامع الصغير، ومحبّ الدين أبو بكر بن محمّد الطبري في ذخائر العقبى، والسيّد عليّ شهاب الهمداني في مودّة القربى، والأحاديث الأربعين للإمام عليّ بن موسى الرضا، وإرشاد المفيد: ٩، وإعلام الورى للطبرسي، مع بعض الاختلافات والزيادات.

فمثلاً ورد في كشف اليقين: ١٧ تحقيق حسين الدركاهي «وُلد أمير المؤمنين ﷺ يوم الجمعة، الثالث عشر من شهر رجب بعد عام الفيل بثلاثين سنة في الكعبة، ولم يولد سواه فيها لا قبله ولا بعده».

وفي ينابيع المودّة للقندوزي: ٢/ ٦٧ تحقيق السيّد عليّ جمال «كانت ولادته ﷺ يوم الجمعة، عاشر رجب المرجب سنة ثلاثين من عام الفيل». وقد ورد في غاية المرام: ١٢ ب ٣ المقصد الأوّل ح ١ ←

سنة[1]، وقيل بعشر سنين[2]. ولم يولد في البيت الحرام قبله أحد سواه، وهي فضيلة خصّه الله تعالى بها إجلالاً له وإعلاءً لمرتبته وإظهاراً لتكرمته. وكان عليّ ﷺ هاشمياً من هاشميين وأول مَن ولده هاشم مرّتين[3].

«كانت ولادته ﷺ يوم الجمعة ثالث عشر رجب، بعد مولد رسول الله بثلاثين سنة». ومثله روى ابن المغازلي في المناقب: ٦ ح ٣. وكذلك كشف الغمّة للإربلي باب المناقب: ١ / ٨٢، البحار: ٣٥ / ٨ و ١٧. ومثله في المناقب لابن شهرآشوب: ٢ / ١٧٤، الكافي: ١ / ٤٥٢.

وفي مستدرك الصحيحين: ٣ / ٤٨٣ «أنّ علياً ﷺ ولد في جوف الكعبة». وفي نور الأبصار: ٦٩ «ولد ﷺ بمكة داخل البيت الحرام يوم الجمعة ثالث عشر رجب الحرام سنة ثلاثين من عام الفيل قبل الهجرة بثلاث وعشرين، وقيل بخمس وعشرين، وقبل المبعث باثنتي عشرة سنة، وقيل بعشر سنين، ولم يولد في البيت الحرام قبله أحد سواه». ومثله في كنوز الدقائق: ١٨٨، أسد الغابة: ٤ / ٣١ والفضائل لابن شاذان: ٥٤.

(١) قال ابن عيّاش: إنّ اليوم الثالث عشر من رجب كان مولد أمير المؤمنين ﷺ في الكعبة قبل النبوّة باثنتي عشرة سنة. (مرآة العقول: ٥ / ٢٧٥). وانظر ما قاله رسول الله ﷺ في ولادة عليّ ﷺ كما أورده الحافظ الكنجي الشافعي في كفاية الطالب: ٢٦٠ نقلاً عن الإحقاق: ٧ / ٤٨٨.

(٢) انظر الإصابة لابن حجر بهامش الاستيعاب: ٢ / ٥٠١.

(٣) قال ثقة الإسلام الكليني ﷺ: ولد أمير المؤمنين ﷺ بعد عام الفيل بثلاثين سنة، وقتل في شهر رمضان لتسع بقين منه ليلة الأحد سنة أربعين من الهجرة، وهو ابن ثلاث وستين سنة، بقي بعد قبض النبيّ ﷺ ثلاثين سنة. وأمّه فاطمة بنت أسد بن هاشم بن عبد مناف، وهو أول هاشمي ولده هاشم مرّتين. (الكافي: ١ / ٤٥٢). يعني انتسب إلى هاشم من قِبل الأب والأم معاً، وكان المراد الأوّلوية الإضافية وإلّا فإخوته كانوا أكبر منه فكيف يكون أول من ولده هاشم مرّتين، فالأولى ما ذكره المفيد والشهيد وغيرهما. هو وإخوته أول هاشمي ولد بين هاشميين. وقال بعضهم: كانت فاطمة أول هاشمية ولدت لهاشمي. (مرآة العقول: ٥ / ٢٧٧).

وقال المحقّق الإربلي: ولم يولد في البيت الحرام أحد سواه قبله ولا بعده، وهي فضيلة خصّه الله بها إجلالاً له وإعلاءً لرتبته وإظهاراً لتكرمته. (كشف الغمّة: ١ / ٨١).

وقال السيّد الرضي ﷺ: ولم نعلم مولوداً في الكعبة غير عليّ ﷺ. وقال السيّد المرتضى ﷺ: لا نظير له في هذه الفضيلة. وقال الطبرسي: لم يولد قطّ في بيت الله تعالى مولود سواه لا قبله ولا بعده. (انظر

إزالة الخفاء

عن خلافة الخلفاء

للإمام المحدث الشاه ولي الله الدهلوي
ت ١١٧٦ هـ

تحقيق وتعليق
الأستاذ الدكتور
المحدث تقي الدين الندوي

تعريب
فيروز أختر الندوي

الجزء الرابع

دار القلم
دمشق

وكان يجمعُنا على طعامه، فكانت هذه المرأةُ تُفضِل منه كلّه نصيباً فأعودُ فيه، أخرجه الحاكم(١).

• ومن مناقب علي بن أبي طالب رضي الله عنه التي ظهرت حين ولادته أنّه ولد في جوفِ الكعبة المشرفة.

• قال الحاكم في ترجمة حكيم بن حزام وقول مصعب فيه: لم يولد قبلَه ولا بعدَه في الكعبةِ أحد، ما نصّه: وَهِمَ مصعب في الحرف الأخير فقد تواترتِ الأخبارُ أنَّ فاطمة بنت أسد ولدت أمير المؤمنين علي بن أبي طالب كرم الله وجهه في جوف الكعبة(٢).

❁ [كفالة النبي ﷺ إياه]:

• ومنها: أنّه أدركته العنايةُ الربانيةُ في صغر سنّه، وقد تكفّله رسول الله ﷺ، فكان إسلامُه وصلاتُه مع رسولِ اللهِ ﷺ قبل أن يبلغَ رشده.

❁ [سبقه إلى الإيمان والعبادة]:

• وقد ذهبَ كثيرٌ من الصحابة والتابعين إلى أنّه كان أول من أسلم بعد خديجة رضي الله عنها، وقد سبق فصلٌ في هذا الباب في مآثر أبي بكر رضي الله عنه.

• قال محمد بن إسحاق: وحدثني عبد الله بن أبي نجيح، عن مجاهد بن جبير أبي الحجاج قال: كان من نعمةِ اللهِ على عليٍّ بن أبي طالب رضي الله عنه، وممّا صنع الله له وأراده به من الخير أنَّ قريشاً أصابتهم أزمةٌ شديدةٌ، وكان أبو طالب ذا عيال كثير، فقال رسولُ اللهِ ﷺ للعباس

---

(١) «المستدرك على الصحيحين» (٣/ ١١٦) برقم: (٤٥٧٤).
(٢) «المستدرك على الصحيحين» (٣/ ٥٥٠) برقم: (٦٠٤٤).

تذكرة الخواص من الأمة بذكر خصائص الأئمة

تأليف

يوسف بن فرغلي البغدادي سبط ابن الجوزي

(٥٨١-٦٥٤هـ)

تحقيق

حسين تقي زاده

الجزء الأول

أبواه هاشميّان، سوى أمير المؤمنين عليّ عليه السلام ومحمّد ابن زبيدة ولد هارون الرّشيد الملقّب بالأمين[1]، وكذا لم يلِ الخلافة من اسمه عليّ، سوى أمير المؤمنين وعليّ بن المعتضد ويلقّب بالمكتفي[2].

قال عِكْرِمة[3]: إنّ فاطمة بنت أسد كانت تطوف بالبيت وهي حامل بعليّ[4] عليه السلام، فضربها الطّلق، ففتح لها باب الكعبة، فدخلت فوضعته فيها[5]. وكذا حكيم بن

⇐ مناقب عليّ عليه السلام، والإصابة لابن حجر العسقلاني: ج ٤، ص ٣٨٠ في ترجمة فاطمة بنت أسد، تحت الرقم ٨٣١، وتاريخ الخلفاء للسيوطي: ص ١٥٥ في نسب أمير المؤمنين عليه السلام.

(١) كما في أسد الغابة لابن الأثير: ج ٥، ص ٥١٧ في ترجمة فاطمة بنت أسد، وسير أعلام النبلاء للذهبي: ج ٩، ص ٣٣٥ في ترجمة محمّد بن هارون، وتاريخ الخلفاء للسيوطي: ص ٢٨١ في ترجمة محمّد بن هارون.

(٢) كما في تاريخ بغداد للخطيب البغدادي: ج ١١، ص ٣١٧ في ترجمة علي بن أحمد المكتفي بالله، والمنتظم لأبي الفرج ابن الجوزي: ج ٦، ص ٣١ في حوادث سنة ٢٨٩ في عنوان: «باب ذكر خلافة المكتفي بالله»، والبداية والنهاية لابن كثير: ج ١١، ص ١٠١ في حوادث سنة ٢٨٩ في عنوان: «خلافة المكتفي بالله»، وتاريخ الخلفاء للسيوطي: ص ٣٤٨ في ترجمة المكتفي بالله عليّ بن المعتضد، وشذرات الذهب لابن عماد الحنبلي: ج ١، ص ٢١٩ في حوادث سنة ٢٩٥، ومروج الذهب للمسعودي: ج ٢، ص ٣٥٩ في ترجمة عليّ عليه السلام.

(٣) كذا في خ، وفي ك: وروي أنّ...

وعِكْرِمة، هو عِكْرِمة القرشي الهاشمي البربري، أبو عبد الله المدني، مولى عبد الله بن عبّاس، وثّقه جماعة، ومات في سنة ١٠٤، أو ١٠٥، أو ١٠٦، أو ١٠٧. (تهذيب الكمال ٢٠ / ٢٦٤ رقم ٤٠٠٩).

(٤) خ: بأمير المؤمنين، بدل: بعلي.

(٥) قال الحاكم النيسابوري في المستدرك: ج ٣، ص ٤٨٣ في ترجمة حكيم بن حزام القرشي: فقد تواترت الأخبار أنّ فاطمة بنت أسد ولدت أمير المؤمنين علي بن أبي طالب كرّم الله وجهه في جوف الكعبة.

أقول: وردت هذه الأخبار عن الإمام علي بن الحسين والإمام جعفر الصادق وجابر بن عبد الله والعباس بن عبد المطّلب والزّهري ويزيد بن قعنب وأمّ عمارة بنت عبادة، فلاحظ الأمالي للشيخ الصدوق، الحديث ٩ من المجلس ٢٧، ومعاني الأخبار للصدوق: ص ٦٢ في باب معاني أسماء محمّد وعلي، تحت الرقم ١٠، وعلل الشرايع للصدوق: ج ١، ص ١٣٥، تحت الرقم ٣ من الباب ١١٦ في عنوان: «العلّة التي من أجلها سمّي ... علياً»، والأمالي للشيخ الطوسي، الحديث ١ من المجلس ٤٢، والإرشاد ...

مطالب السؤول

في مناقب آل الرسول (صلى الله عليه وآله)

الكتاب الذي يعطيك صورة صادقة عن سيرة الائمة الإثني عشر (عليهم السلام) باسلوب رصين محكم وضبط وتحقيق تسالم الفريقان على صحته وتأييده فهو خير مصدر يرجع إليه ويعول عليه .

تأليف

الشيخ الامام العلامة ابي سالم كمال الدين محمد بن طلحة
ابن محمد بن الحسن القرشي العدوي النصيبي الشافعي
المتوفى ٦٥٢

طبع بإشراف

السيد عبد العزيز الطباطبائي

الباب الأول
في أمير المؤمنين علي بن أبي طالب (عليه السلام)

وهو مشتمل على اثني عشر فصلاً :

الأول في ولادته، الثاني في نسبة أباً وأماً، الثالث في أسمه وكنيته ولقبه، الرابع في صفته، الخامس في محبة الله (تعالى) ورسوله (صلى الله عليه وآله وسلم) له ومؤاخاة الرسول إياه ، السادس في علمه وفضله، السابع في عبادته وزهده وورعه ، الثامن في شجاعته وجهاده ومواقفه، التاسع في كراماته، العاشر في فصاحته وجمل من كلامه، الحادي عشر في أولاده، الثاني عشر في مبلغ عمره ووفاته ومقتله.

الفصل الأول : في ولادته وما يتعلق بها :

ولد (عليه السلام) في ليلة الأحد الثالث والعشرين من شهر رجب سنة تسع مائة وعشر من التاريخ الفارسي المضاف إلى الاسكندر وكان ملك الفرس يومئذ مستمراً وكان ملكهم ابرويز بن هرمز .

وقيل ولد بالكعبة البيت الحرام وكان مولده بعد أن تزوج رسول الله (صلى الله عليه واله وسلم) بخديجة (رض) بثلاث سنين، وكان عمر رسول الله (صلى الله عليه وآله وسلم) يوم ولادته ثمانياً وعشرين سنة.

فلما نشأ وكبر أصاب أهل مكة جدب شديد وقحط مؤلم اجحف بذوي الثروة وأضر إلى الغاية بذوي العيال، فقال رسول الله (صلى الله

مناقب آل محمد (ص)

المسمّى بـ:

النعيم المقيم لعترة النبأ العظيم

تأليف

شيخ الشافعية العارف شرف الدين أبي محمد عمر بن شجاع الدين
محمد بن عبد الواحد الموصلي
المتوفى سنة ٦٥٧ هـ

تحقيق

العلامة السيد علي عاشور

منشورات
مؤسسة الأعلمي للمطبوعات
بيروت - لبنان
ص ب : ٧١٢٠

[لو كان قاتل عمرو غير قاتله لكنت أبكي عليه آخر الأبد]

لكن قاتله من لا يعاب به من كان يدعى قديماً بيضة البلد[١]

وكنيته: أبو الحسن المرتضى، وأبو الحسين، وأبو محمد، وأبو قصم، وأبو تراب. وأتاه النبي ﷺ وهو مضطجع بالمسجد، وقد سقط رداؤه عن شقه فأصاب التراب، فجعل النبي يمسحه ويقول: «قم أبا تراب»[٢].

قد حلف الناس ولم يكذبوا يا هاشمي الأصل من هاشم

مولده عليه السلام: في الكعبة المعظمة، ولم يولد بها سواه في طلقة واحدة[٣].

ولما نزل الأرض رأي عليها ساجداً قائلاً: لا إله إلّا الله، محمد رسول الله، علي ولي الله - أو وصي الله -[٤].

أشرقت لولادته الأرض، وفتحت أبواب السماء، وسمع في الهواء:

خصصتما بالولد الزكي والطاهر المنتجب الرضي

وإن اسمه من شامخ علي علىٌ اشتق من العلي[٥]

ولد مسروراً نظيفاً، لم يُر كحسنه، فسمّاه والده علياً، واسم أبي طالب: عبد مناف، وذو الكفل بن عبد المطلب بن هاشم، ويلتحق بنسب النبي عليه السلام، لا نعيده. حمله النبي عليه السلام إلى منزله، وذلك في اليوم العاشر من رجب من سنة ثمان وعشرين

---

١ - المستدرك: ٣ / ٣٣، أمالي المرتضى: ٣ / ٩٥، شرح نهج البلاغة: ١ / ٢٠، دستور معالم الحكم لابن سلامة: ١٨٨، وما بين المعقوفتين غير واضح في المخطوط، وما أثبتناه من المصادر.

٢ - صحيح البخاري: ١ / ١٢٠ و ٥ / ٢٣ و ٨ / ٥٥، الأدب المفرد: ٢٨٧ / ٢٧٨ ح ٨٥٥، صحيح مسلم: ٤ / ١٨٧٤ ح ٣٤٠٩، مسند الإمام أحمد: ٤ / ٢٦٣، خصائص الإمام علي للنسائي: ١٦٢ / ١٥٣، المعجم الكبير للطبراني: ٦ / ١٤٩ ح ٥٨٠٨، المستدرك على الصحيحين: ٣ / ١٤١، تهذيب التهذيب: ٧ / ٢٩٤ ترجمة ٩٦٦، مطالب السؤول: ١ / ٥٩، تاريخ الإسلام: ٢ / ٦٢٢.

٣ - تاريخ ابن الخشاب: ٨٨، مروج الذهب: ٢ / ٣٤٩، المستدرك: ٣ / ٤٨٣، مطالب السؤول: ١ / ٥١، كفاية الطالب: ٤٠٧، أسد الغابة: ٤ / ٣١، الفصول المهمة: ٣٠، نور الأبصار: ٨٥.

٤ - الفضائل: ٥٨، بحار الأنوار: ٣٥ / ١٠٤.

٥ - مناقب آل أبي طالب: ٢ / ٢٣، الفضائل لابن شاذان: ٥٧، ينابيع المودة: ٢ / ٣٠٦ ح ٨٧٣، بحار الأنوار: ٣٥ / ١٩

معارج الوصول
إلى
معرفة فضل آل الرسول والبتول

تأليف

جمال الدين محمّد بن يوسف

الزرندي الحنفي «٦٩٣ - ٧٥٧»

تحقيق

محمّد كاظم المحمودي

مجمع إحياء الثقافة الإسلاميّة

[أمّه]

وأمّه فاطمة بنت أسد بن هاشم بن عبدمناف بن قصيّ، وهي أوّل هاشمية ولدت لهاشمي[١]، فهاشم وَلَده مرّتين[٢].

[ولادته]

ووُلد كرّم الله وجهه في جوف الكعبة يوم الجمعة الثالث عشر من رجب[٣] قبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة على المشهور[٤]، وقيل لخمس وعشرين، وقيل أقلّ من ذلك.

[إسلامه]

وأسلم[٥] في السنة الأولى من النبوّة وهو ابن ثمان سنين.

قال عروة بن الزبير / ١٤ /: أسلم عليّ والزبير وهما ابنا ثمان سنين[٦].

---

١ ـ نظم درر السمطين: ص ٨٠، وفرائد السمطين: ١ / ٤٢٥، إعلام الورى: ١ / ٣٠٦، المستدرك للحاكم: ٣ / ١٠٨.

٢ ـ الإرشاد للمفيد: ١ / ٦، الكافي: ١ / ٤٥٢، وغيرهما.

٣ ـ إعلام الورى: ١ / ٣٠٦، كفاية الطالب: ص ٤٠٧، تذكرة الخواص: ص ١٠، مناقب ابن المغازلي: ص ٦ ح ٣، مناقب آل أبي طالب: ٢ / ١٩٦ ـ ٢٠٠.

وفي المستدرك: ٣ / ٤٨٣ في ترجمة «حكيم بن حزام»: تواترت الأخبار أنّ فاطمة بنت أسد ولدت أمير المؤمنين عليّ بن أبي طالب كرّم الله وجهه في جوف الكعبة.

٤ ـ انظر أوّل ترجمة أمير المؤمنين عليه السلام من كشف الغمّة، وإعلام الورى: ١ / ٣٠٦.

٥ ـ لم يكن مشركاً حتى يسلم، بل كان هو والنبيّ (ص) يعبدان الله ويوحّدانه قبل البعثة بتسديدٍ إلهي خاص، وهناك نصوص كثيرة من السنة والشيعة تدلّ على ذلك.

وقد ذكر المصنّف بعض ما يرتبط بإسلامه في نظم درر السمطين: ص ٨١ ـ ٨٥ بترتيب آخر.

٦ ـ المعجم الكبير للطبراني: ١ / ٩٥، السنن الكبرى للبيهقي: ٦ / ٢٠٦، المناقب للخوارزمي ←

نور الأبصار

في

مناقب آل بيت النبى المختار

صلى الله عليه وآله وسلم

تأليف

الشيخ مؤمن بن حسن مؤمن الشبلنجى
رحمه الله تعالى وأثابه

أول طبعة مخرجة الأحاديث
بالعالم الإسلامى

قام بتحقيقها وتنقيحها والتقديم لها
الدكتور/ محمد سيد سلطان — الأستاذ/ عبد المنعم علي سليمان
جامعة الأزهر الشريف — المدرس الأول بالأزهر الشريف

الناشر: دار جوامع الكلم
١٧ شارع الشيخ صالح الجعفرى - الدراسة - القاهرة
تليفون: ٢٥٨٩٨٠٢٩٠

فصل

فى ذكر مناقب سيدنا على بن أبى طالب ابن عم الرسول وسيف الله المسلول

ولد رضى الله تعالى عنه بمكة داخل البيت الحرام على قول يوم الجمعة ثالث عشر رجب الحرام سنة ثلاثين من عام الفيل قبل الهجرة بثلاث وعشرين سنة وقيل بخمس وعشرين وقبل المبعث باثنتى عشرة سنة وقيل بعشر سنين ولم يولد فى البيت الحرام قبله أحد سواه قاله ابن الصباغ (وأمه) فاطمة بنت أسد بن هاشم بن عبد مناف تجتمع مع أبى طالب فى هاشم جد النبى صلى الله عليه وآله وسلم نقل عنها أنها كانت إذا أرادت أن تسجد لصنم وعلى رضى الله تعالى عنه فى بطنها لم يمكنها يضع رجله على بطنها ويلصق ظهرها ويمنها من ذلك ولذلك يقال عند ذكره كرم الله وجهة أى عن أن يسجد لصنم وهى أول هاشمية ولدت هاشمياً ولما ماتت كفنها صلى الله عليه وآله وسلم بقميصه لأنها كانت عنده بمنزلة أمه وأمر صلى الله عليه وآله وسلم أسامة بن زيد وأبا أيوب الأنصارى وعمر ابن الخطاب وغلاماً أسود فحفروا قبرها بالبقيع فلما بلغوا لحدها حفره رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم بيده وأخرج ترابه فلما فرغ اضطجع فيه وقال اللهم اغفر لأمى فاطمة بنت أسد ولقنها حجتها ووسع عليها مدخلها بحق نبيك محمد والأنبياء الذين من قبلى فإنك أرحم الراحمين فقيل يارسول الله رأيناك صنعت شيئًا لم تكن بأحد قبلها فقال صلى الله عليه وآله وسلم ألبستها قميصى لتلبس من ثياب الجنة [illegible]

ديوان الحديث النبوي

(١٣)

المستدرك على الصحيحين

للإمام الحافظ أبي عبد الله الحاكم النيسابوري

المتوفى سنة ٤٠٥ هجرية

لأول مرة

مضبوطا ومحققا على أقدم الأصول الخطية

ومطبوعا بترتيبه الصحيح

ومشفوعا

بدراسة استقرائية لتعقب

أحكام الإمام الحاكم على أحاديثه

مع تعيين كافة رواة أسانيد الكتاب

المجلد السادس

تحقيق ودراسة

مركز البحوث وتقنية المعلومات

دار التأصيل

مُعَاوِيَةُ عَامَ حَجَّ ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ بِلَقُوحٍ يَشْرَبُ مِنْ لَبَنِهَا ، وَذَلِكَ بَعْدَ أَنْ سَأَلَهُ أَيُّ الطَّعَامِ تَأْكُلُ؟ فَقَالَ : أَمَّا مَضْغٌ فَلَا مَضْغَ فِيَّ ، فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ بِاللَّقُوحِ ، وَأَرْسَلَ إِلَيْهِ بِصِلَةٍ فَأَبَى أَنْ يَقْبَلَهَا ، وَقَالَ : لَمْ آخُذْ مِنْ أَحَدٍ بَعْدَ النَّبِيِّ ﷺ شَيْئًا ، وَدَعَانِي أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ إِلَى حَقِّي ، فَأَبَيْتُ عَلَيْهِمَا أَنْ آخُذَهُ .

•[٦١٧٤] قَالَ ابْنُ عُمَرَ : فَحَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ ، عَنْ أَبِيهِ ، قَالَ : قِيلَ لِحَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ : مَا الْمَالُ يَا أَبَا خَالِدٍ؟ فَقَالَ : قِلَّةُ الْعِيَالِ[1] .

قَالَ : وَقَدِمَ حَكِيمُ بْنُ حِزَامٍ الْمَدِينَةَ فَنَزَلَهَا ، وَبَنَى بِهَا دَارًا ، وَمَاتَ بِالْمَدِينَةِ سَنَةَ أَرْبَعٍ وَخَمْسِينَ وَهُوَ ابْنُ مِائَةٍ وَعِشْرِينَ سَنَةً[2] .

•[٦١٧٥] أَخْبَرَنَا أَبُو بَكْرٍ مُحَمَّدُ بْنُ أَحْمَدَ بْنِ بَالَوَيْهِ ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ إِسْحَاقَ الْحَرْبِيُّ ، حَدَّثَنَا مُصْعَبُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ ، فَذَكَرَ نَسَبَ حَكِيمِ بْنِ حِزَامٍ وَزَادَ فِيهِ ، وَأُمُّهُ فَاخِتَةُ ابْنَةُ زُهَيْرِ بْنِ أَسَدِ بْنِ عَبْدِ الْعُزَّى ، وَكَانَتْ وَلَدَتْ حَكِيمًا فِي الْكَعْبَةِ وَهِيَ حَامِلٌ ، فَضَرَبَهَا الْمَخَاضُ ، وَهِيَ فِي جَوْفِ الْكَعْبَةِ ، فَوَلَدَتْهُ فِيهَا فَحُمِلَتْ فِي نِطْعٍ ، وَغُسِلَ مَا كَانَ تَحْتَهَا مِنَ الثِّيَابِ عِنْدَ حَوْضِ زَمْزَمَ ، وَلَمْ يُولَدْ قَبْلَهُ ، وَلَا بَعْدَهُ فِي الْكَعْبَةِ أَحَدٌ .

■ وَهِمَ مُصْعَبٌ فِي الْحَرْفِ الْأَخِيرِ ، فَقَدْ تَوَاتَرَتِ الْأَخْبَارُ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ أَسَدٍ وَلَدَتْ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ كَرَّمَ اللَّهُ وَجْهَهُ فِي جَوْفِ الْكَعْبَةِ .

•[٦١٧٦] أَخْبَرَنَا الشَّيْخُ أَبُو بَكْرِ بْنُ إِسْحَاقَ الْإِمَامُ رَحِمَهُ اللَّهُ ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ قُتَيْبَةَ ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ ، عَنْ أَبِيهِ ، أَنَّ حَكِيمَ بْنَ حِزَامٍ لَمْ يَقْبَلْ مِنْ أَبِي بَكْرٍ حَتَّى قُبِضَ ، وَلَا مِنْ عُمَرَ حَتَّى قُبِضَ ، وَلَا مِنْ عُثْمَانَ ، وَلَا مِنْ مُعَاوِيَةَ حَتَّى مَاتَ حَكِيمٌ[3] .

---

(١) هذا مما فات الحافظ ابن حجر في «الإتحاف» أن يعزوه للحاكم .

(٢) فيه سليمان بن داود الشاذكوني : متروك ، ومحمد بن عمر الواقدي : متروك .

जो क'बा में हो पैदा
और शहादत पाए मस्जिद में
खुदा के घर का वारिस वोह बशर
यूँ भी है और यूँ भी
Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahl-e-Sunnat)
IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
Ahl-E-Sunnat
Reg.No. E/1432/Aravalli. GUJARAT, INDIA
modasa, gujarat (india)
Mo. 85110 21786